Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

सामाजिक-आर्थिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

कु. प्रभा[1], डॉ.अनिल कुमार शुक्ला[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

[2]प्राचार्य, माँ अष्टभुजा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जिला- मऊगंज (म.प्र.)

Email: Chaudharyprabha224@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180125
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 126-131
January - 2026
Submitted: 17 Dec. 2025
Revised: 27 Dec. 2025
Accepted: 12 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

शिक्षा को किसी भी समाज के समग्र विकास और प्रगति का आधार माना जाता है, परंतु विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल विद्यालयी पाठ्यक्रम और शैक्षणिक अवसंरचना पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर का भी इस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति, अभिभावकों का शैक्षिक स्तर, सामाजिक परिवेश तथा उपलब्ध संसाधन विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया और शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के रीवा जिले में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में रीवा जिले के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों से संबंधित माध्यमिक स्तर के 80 विद्यार्थियों (जिसमे 40 छात्र और 40 छात्राओं) को सम्मिलित किया गया। तथा मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी-मान जैसी सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से उनका विश्लेषण किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध होने के बावजूद विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है तथा विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों की उपलब्धि में उल्लेखनीय अंतर दृष्टिगोचर होता है।

मुख्यशब्द- *सामाजिक-आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, विद्यालयी पाठ्यक्रम, शैक्षणिक अवसंरचना, शैक्षिक स्तर, सामाजिक परिवेश*

प्रस्तावना

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किसी भी समाज की शैक्षिक गुणवत्ता और समानता को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है। सामाजिक-आर्थिक स्तर से आशय परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, रहन-सहन की परिस्थितियाँ तथा उपलब्ध संसाधनों से होता है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया और शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से संबंधित परिवारों के विद्यार्थियों को प्रायः बेहतर शैक्षिक वातावरण, पर्याप्त अध्ययन सामग्री, निजी शिक्षण सहायता, तकनीकी संसाधन तथा प्रेरक पारिवारिक सहयोग प्राप्त होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत उच्च देखी जाती है। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को सीमित संसाधनों, आर्थिक दबावों, अपर्याप्त शैक्षिक सुविधाओं और कभी-कभी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अध्ययन में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की विद्यालय तक पहुँच, विद्यालय में निरंतरता तथा सीखने की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों में विद्यालय छोड़ने की दर अधिक पाई जाती है, क्योंकि उन्हें परिवार की आय बढ़ाने के लिए कम उम्र में ही कार्य में संलग्न होना पड़ता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
कु. प्रभा, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

How to cite this article:
प्रभा, & शुक्ला, . अनिल . कुमार . (2026). सामाजिक-आर्थिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 126–131. https://doi.org/10.5281/zenodo.18617771

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18617771
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

साथ ही, ऐसे परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता और शैक्षिक मार्गदर्शन की कमी भी देखने को मिलती है, जिससे विद्यार्थियों की प्रेरणा और आत्मविश्वास प्रभावित होता है। दूसरी ओर, उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवार शिक्षा को सामाजिक उन्नति का साधन मानते हैं और अपने बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण विद्यालय, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और करियर परामर्श की व्यवस्था करते हैं, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। विद्यालयी परिवेश और शिक्षकों की भूमिका भी सामाजिक-आर्थिक स्तर से जुड़ी हुई है। संसाधन-सम्पन्न विद्यालयों में योग्य शिक्षक, आधुनिक शिक्षण-सामग्री, डिजिटल तकनीक और सहायक अधोसंरचना उपलब्ध होती है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। इसके विपरीत, संसाधन-विहीन विद्यालयों में कक्षा-आकार बड़ा होना, शिक्षकों की कमी और सीमित सुविधाएँ विद्यार्थियों के सीखने के अवसरों को सीमित कर देती हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-आर्थिक असमानता के कारण विद्यार्थियों के बीच सीखने की गति और उपलब्धि में अंतर उत्पन्न हो जाता है, जो दीर्घकाल में शैक्षिक और सामाजिक असमानता को और गहरा करता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा संबंध है। इस असमानता को कम करने के लिए आवश्यक है कि सरकार और शैक्षिक संस्थाएँ समावेशी नीतियाँ अपनाएँ, जैसे छात्रवृत्ति योजनाएँ, मध्याह्न भोजन, निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम। साथ ही, अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना और विद्यालय-समुदाय के बीच सहयोग को मजबूत करना भी आवश्यक है। जब सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को दूर कर सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाते हैं, तभी वास्तविक अर्थों में शैक्षिक समानता और गुणवत्तापूर्ण उपलब्धि सुनिश्चित की जा सकती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है-

1 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

2. मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3. निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है-

एच1. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

एच2. मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

एच3. निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध कार्यप्रणाली

शोध विधि

प्रस्तुत शोध विधि में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है, क्योंकि यह एक सर्वोत्तम विधि है। यह दत्तों का सकलन, संग्रहण, सारणीयन, वर्गीकरण, मूल्याँकन, सामान्यीकरण एवं व्याख्या, तुलना एवं मापन भी करती है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन, समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा स्वयं उपस्थित होकर सामाजिक-आर्थिक स्तर पर माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित दत्त संकलन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध समस्या हेतु के लिए रीवा जिले के 80 विद्यार्थियों (जिसमे 40 छात्र और 40 छात्राओं) का चयन किया गया तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सामाजिक-आर्थिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्व-निर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

> औसत (Mean)

> मानक विचलन (SD)

> स्वतंत्रता डिग्री (df)

> टी-टेस्ट

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

शोध कार्य की सीमाएँ

- अध्ययन केवल रीवा जिले तक सीमित है।
- छात्र और छात्राओं द्वारा दिए गए उत्तर स्व-रिपोर्ट पर आधारित हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

लिंग:

तालिका 1: उत्तरदाता के लिंग का प्रकार

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत दर
छात्र	40	50%
छात्राएँ	40	50%
कुल	**80**	**100**

स्रोत- (प्राथमिक डेटा)

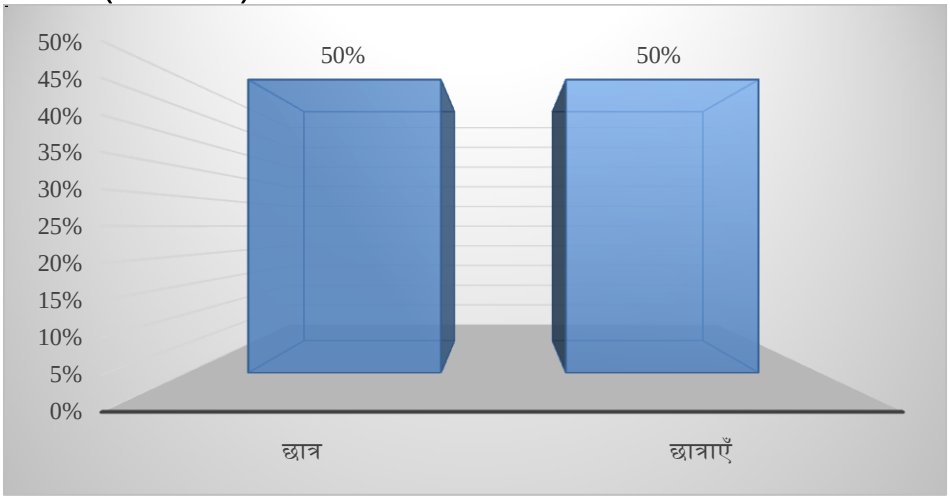

चित्र 1: उत्तरदाता के लिंग का प्रकार

तालिका 1 का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं में लिंग के आधार पर पूर्ण संतुलन पाया गया है। कुल 80 उत्तरदाताओं में से 40 छात्र एवं 40 छात्राएँ हैं, जो क्रमशः 50 प्रतिशत–50 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह समान वितरण यह दर्शाता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर:

तालिका 2: उत्तरदाता का सामाजिक-आर्थिक स्तर

शिक्षा स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत दर
उच्च स्तर	25	31.25%
मध्यम स्तर	35	43.75%
निम्न स्तर	20	25%
कुल	**80**	**100**

स्रोत- (प्राथमिक डेटा)

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

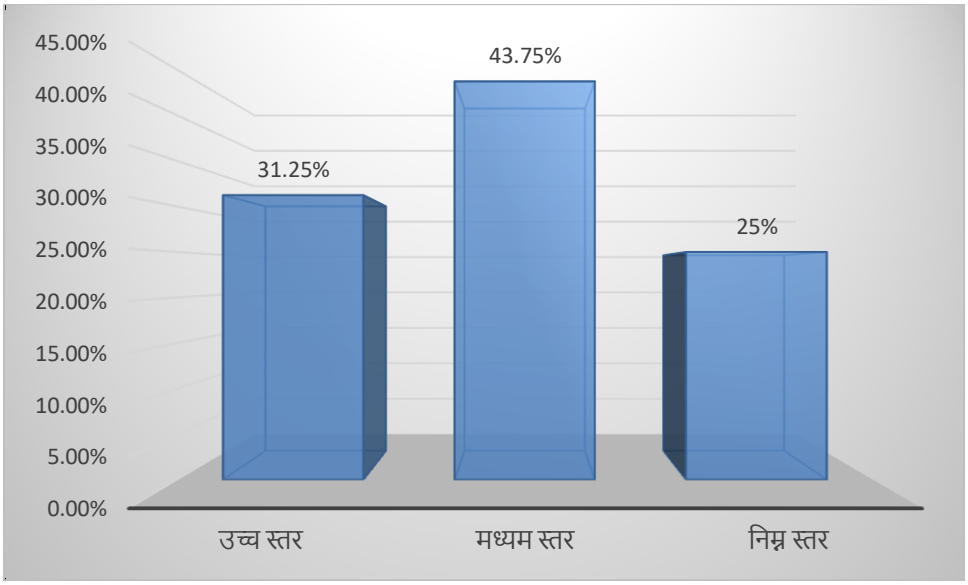

चित्र 2: उत्तरदाता का सामाजिक-आर्थिक स्तर

तालिका 2 का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों का प्रतिनिधित्व पाया जाता है। कुल 80 उत्तरदाताओं में से 25 उत्तरदाता (31.25%) उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से संबंधित हैं, जो यह दर्शाता है कि एक उल्लेखनीय वर्ग ऐसा है जिसे अपेक्षाकृत बेहतर शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक सुविधाएँ प्राप्त हैं। वहीं 35 उत्तरदाता (43.75%) मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर से हैं, जो कि सर्वाधिक प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में मध्यम वर्ग का प्रभुत्व है, जिसे सामान्यतः समाज का मुख्य एवं सक्रिय वर्ग माना जाता है। इसके अतिरिक्त, 20 उत्तरदाता (25%) निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से संबंधित पाए गए हैं।

परिकल्पना परीक्षण

एच1. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका 3: उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का टी–परीक्षण विश्लेषण

समूह	N	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रता डिग्री (df)	टी–मान
छात्र	40	65.20	8.50		
छात्राएँ	40	66.10	8.20	78	0.45

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन टी–परीक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका के अनुसार उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के 40 छात्रों का औसत शैक्षिक उपलब्धि अंक 65.20 तथा मानक विचलन 8.50 पाया गया है, जबकि इसी स्तर की 40 छात्राओं का औसत अंक 66.10 एवं मानक विचलन 8.20 है। दोनों समूहों के औसत अंकों में केवल 0.90 का अंतर देखा गया है, जो अत्यंत कम है।

सांख्यिकीय परीक्षण के लिए स्वतंत्रता डिग्री (df) 78 निर्धारित की गई तथा प्राप्त टी–मान 0.45 है। यह टी–मान 0.05 स्तर पर सार्थक टी–मान से कम है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना एच1 : "उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकार की जाती है। अत: यह निष्कर्ष निकालता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर में दोनों ही वर्गों—छात्र एवं छात्राएँ—को समान शैक्षिक अवसर एवं संसाधन उपलब्ध होने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान पाई गई है।

एच2. मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका 4: मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का टी–परीक्षण विश्लेषण

समूह	N	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रता डिग्री (df)	टी–मान
छात्र	40	64.80	7.90		
छात्राएँ	40	66.50	8.10	78	1.12

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन टी–परीक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका के अनुसार मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के 40 छात्रों का औसत शैक्षिक उपलब्धि अंक 64.80 तथा मानक विचलन 7.90 पाया गया है, जबकि इसी स्तर की 40 छात्राओं का औसत अंक 66.50 एवं मानक विचलन 8.10 है। दोनों समूहों के औसत अंकों में 1.70 का अंतर दृष्टिगोचर होता है, जो संख्यात्मक रूप से सीमित है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु स्वतंत्रता डिग्री (df) 78 निर्धारित की गई तथा प्राप्त टी–मान 1.12 है। यह टी–मान 0.05 स्तर पर आवश्यक सार्थक टी–मान से कम है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना एच2: "मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकार की जाती है। अत: यह निष्कर्ष निकालता है कि मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर में भी छात्र और छात्राएँ लगभग समान शैक्षिक परिस्थितियों एवं अवसरों में अध्ययन कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया है।

एच3. निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका 5: निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का टी–परीक्षण विश्लेषण

समूह	N	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रता डिग्री (df)	टी–मान
छात्र	40	58.30	7.20	78	0.68
छात्राएँ	40	59.10	7.00		

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन टी–परीक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका के अनुसार निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के 40 छात्रों का औसत शैक्षिक उपलब्धि अंक 58.30 तथा मानक विचलन 7.20 पाया गया है, जबकि इसी स्तर की 40 छात्राओं का औसत अंक 59.10 एवं मानक विचलन 7.00 है। दोनों समूहों के औसत अंकों में केवल 0.80 का अंतर पाया गया है, जो अत्यंत न्यून है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु स्वतंत्रता डिग्री (df) 78 निर्धारित की गई तथा प्राप्त टी–मान 0.68 है। यह टी–मान 0.05 स्तर पर अपेक्षित सार्थक टी–मान से कम है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना एच3: "निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकार की जाती है। अत: यह निष्कर्ष निकालता है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर में भी छात्र एवं छात्राएँ लगभग समान शैक्षिक परिस्थितियों एवं सीमित संसाधनों में अध्ययन कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर परिलक्षित नहीं होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तरों पर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया, जिसमें यह स्पष्ट हुआ कि दोनों वर्गों को समान शैक्षिक संसाधन, अवसर एवं अनुकूल पारिवारिक वातावरण उपलब्ध होने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान रही। द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण किया गया, जिसके परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि यद्यपि औसत अंकों में थोड़ा अंतर परिलक्षित हुआ, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं था। तृतीय उद्देश्य के अंतर्गत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया, जिसमें यह पाया गया कि सीमित संसाधनों और समान शैक्षिक परिस्थितियों के कारण दोनों ही वर्गों की उपलब्धि लगभग समान रही। इस प्रकार समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर चाहे उच्च, मध्यम या निम्न हो, लिंग के आधार पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि समान शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाने पर दोनों ही वर्ग समान रूप से शैक्षिक प्रगति कर सकते हैं।

सुझाव

- निम्न और मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास, और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिए ट्यूशन, मेंटरिंग और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से अतिरिक्त मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

- परिवार और समुदाय को शिक्षा में शामिल करना चाहिए, ताकि बच्चों को घर पर भी शिक्षा के प्रति प्रेरित किया जा सके।
- आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, शुल्क में छूट और आवश्यक सामग्री की सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षकों को विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने और उन्हें प्रेरित करने के लिए प्रशिक्षण देना चाहिए।
- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए काउंसलिंग और सहायक कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, रजनी. (2018). भारतीय शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का अध्ययन. Journal of Educational Research and Social Sciences, 10(2), 45–59.
2. वर्मा, सुनीता. (2016). छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और पारिवारिक पृष्ठभूमि. Indian Journal of Education and Development, 8(4), 112–127.
3. कुमार, दीपक. (2017). मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति. Journal of Contemporary Education Studies, 9(1), 78–93.
4. सिंह, अमित. (2015). सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यालयी प्रदर्शन. Education and Society Review, 7(3), 33–47.
5. झा, प्रिया. (2019). लिंग और सामाजिक पृष्ठभूमि का शैक्षिक प्रभाव. International Journal of Education and Gender Studies, 11(2), 150–165.
6. पाण्डेय, रवि. (2018). विद्यालयी उपलब्धियों पर आर्थिक स्थिति का प्रभाव. Journal of Educational Economics and Research, 10(3), 200–215.
7. त्रिपाठी, सीमा. (2020). समान अवसर और छात्र प्रगति. Journal of Education and Equality, 12(1), 5–21.
8. भटनागर, मोनिका. (2017). छात्र और छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन. Journal of Gender and Education Studies, 9(2), 87–102.
9. गुप्ता, अजय. (2016). सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण. Central Indian Journal of Education, 8(3), 130–145.
10. शर्मा, अर्चना. (2019). छात्रों की उपलब्धि में सामाजिक और आर्थिक कारक. Journal of Academic Achievement and Development, 11(4), 250–266.
11. चौहान, संजय. (2018). शैक्षिक उपलब्धियों में लिंग और आर्थिक स्थिति का योगदान. Pune Journal of Educational Research, 10(2), 60–77.
12. राव, दीपिका. (2020). विद्यालयी सफलता और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव. South Asian Journal of Education and Social Sciences, 12(3), 180–197.